स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड

पीएच.डी. (हिन्दी) पंजीकरण हेतु प्रस्तुत विषय की रूपरेखा

''ग़ज़लकार जहीर कुरेशी की ग़ज़लों में चेतना के विविध प्रवाह''

अनुसंधान कर्ता

प्रा.भेंडेकर निवृत्ती शेषेराव

शोध निर्देशक

डॉ.नरसिंगदास बंग

हिंदी विभागाध्यक्ष

पु.अ.होलकर महाविद्यालय, राणीसावरगाव.

अप्रैल / मई 2019

''ग़ज़लकार जहीर कुरेशी की ग़ज़लों में चेतना के विविध प्रवाह''

भूमिका –

साहित्य और समाज का संबंध अन्योन्याश्रित है। साहित्य और समाज एक दूसरे के परस्पर सहायक है। समाज का प्रतिबिम्ब साहित्य में प्रासंगिक रूप लेकर चित्रित होता है। हिन्दी साहित्य का अवलोकन करने के उपरान्त इस बात को और अधिक पुष्टि प्राप्त होती है कि आदिकालीन साहित्य से लेकर वर्तमान कालीन साहित्य तक हिन्दी साहित्य में युगसापेक्ष परिवर्तन उपस्थित हुए हैं। हर बार साहित्य ने अपने समकालीन सामाजिक तथा अन्यान्य परिस्थितियों का चित्रण यथार्थ रूप में किया हुआ दिखाई देता है। साहित्य की हर एक विधा अपने इस दायित्व को परिपूर्ण रूप से निभाती हुई दिखाई देती है। साहित्य की अनेकविध विधाओं की तरह ही ग़ज़ल भी एक ऐसी ही विधा है, जिसमें अपने समसामायिक जीवन की अभिव्यक्ति यथार्थ रूप में चित्रित होती हुई दिखाई देती है।

विषय चयन की प्रेरणा–

मैं एक अहिंदी भाषी मराठी छात्र हुँ। हिन्दी साहित्य के पठन–पाठन में मेरी रूची छात्रावस्था से ही रही हैं। महाविद्‌यालयीन जीवन में हिन्दी साहित्य का अध्ययन करते समय मैं साहित्य की अनेकविध विधाओं से परिचित हुआ। कथा साहित्य की अपेक्षा स्वाभाविक रूप से मुझे काव्य साहित्य में अधिक रुची निर्माण हुई। इसी कारणवश प्रसाद, पंत, निराला, महादेवी वर्मा, केदारनाथ सिंह, सर्वेश्वर, धर्मवीर भारती, दिनकर, समशेर बहादुर सिंह, दुष्यंतकुमार आदि कवि तथा ग़ज़लकारों की रचनाओं को बार बार पढने और प्रेरीत होने का अवसर मुझे प्राप्त हुआ। स्नातकोत्तर शिक्षा प्राप्त करते समय मेरी यह रूची और अधिक बढती गई। इसमें भी मुझे विविध ग़जलकारों की ग़ज़लों ने अत्यधिक आकर्षित किया जिस कारण ग़ज़ल विधा के अध्ययन में मेरी रूची बढती गई। इनमें जहीर कुरेशी की ग़ज़लों ने मुझे अत्याधिक प्रभावित किया है। अतः अनके ग़ज़लों के अध्ययन की जिजिविषा के कारण अपने अनुसंधान कार्य हेतु मैने 'ग़ज़लकार जहीर कुरेशी की ग़ज़लों में चेतना के विविध प्रवाह' इस विषय का चयन किया है।

अनुसंधान कार्य के उद्‌देश्य–

'ग़ज़लकार जहीर कुरेशी की ग़ज़लों में चेतना के विविध प्रवाह' इस प्रस्तावित शोध–विषय के कुछ प्रमुख उद्‌देश्य है।

1) ज़हिर कुरेशी के जीवन एवं व्यक्तित्व के कुछ ऐसे पहलु है, जो उनके ग़ज़ल–साहित्य को प्रस्थापित करते हैं, उन्हें खोजना। इस बहाने जहीर कुरेशी जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को जानना है।

2) ग़ज़ल विधा का अध्ययन करना है।

3) आलोच्य रचनाकार के समकालीन युग–पृष्ठभूमि का अध्ययन कर उनके साहित्य में उसे कैसे चित्रित किया गया है, इसका अन्वेषण करना।

4) प्रस्तुत अनुसंधान कार्य का हेतु जहीर कुरेशी जी के सभी ग़ज़ल संग्रहों का समग्र अध्ययन एवं अनुशीलन करना है।

5) ज़हीर कुरेशी की ग़ज़लों में चित्रित विविध चेनाओं का अध्ययन करना।

6) समग्र रूप से आधुनिक हिंदी ग़ज़लकारों में ज़हीर कुरेशी के साहित्यक योगदान को परिलक्षित करना, आदि इस अनुसंधन कार्य के मुख्य उद्येश्य है।

अनुसंधान पद्धति –

प्रस्तुत अनुसंधान कार्य के लिए मुख्यतः साहित्यिक अनुसंधान पद्धती का प्रयोग किया जायेगा। वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक अनुसंधान पद्धति के प्रयोग के साथ ही ग़ज़ल विधा एवं जहीर कुरेशी के समग्र ग़ज़ल संकलनों का अध्ययन कर विश्लेषणात्मक रूप से तथ्य निरूपण के साथ निष्कर्ष प्रतिपादित किए जायेंगे।

पूर्वानुसंधन–

ज़हीर कुरेशी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व, ग़ज़ल–साहित्य आदि का अनुसंधान कार्य संभवतः कहीं हुआ होगा। जहाँ तक हमें ज्ञात है उनकी ग़ज़लों का एक विशिष्ट दृष्टिकोण– अर्थात 'चेतना के विविध प्रवाह' को केंद्र में रखकर अनुसंधान कार्य नहीं हुआ है। संभवतः इस क्षेत्र में यह अनुसंधान कार्य नया है।

अनुसंधान का महत्व–

उक्त चयनित विषय के अनुसंधान का महत्व निम्न रूप में है–

1. एक ग़ज़लाकार के जीवन एवं साहित्य–लेखन को इस अनुसंधान के माध्यम से देखा जा सकता है।
2. आलोच्य ग़ज़लकार के समकालीन पवरिवेश को समग्र रूप से देखने में सहाय्ता मिल सकती है।
3. ज़हिर कुरेशी के ग़ज़ल–साहित्य में अभिव्यक्त चेतना के विविध प्रवाह की दृष्टि से अध्ययन करने में उक्त विषय का महत्व है।

4. हिंदी ग़ज़ल–यात्रा में अभिव्यक्त चेतना को जानने–समझने में इस अनुसंधान का महत्व हो सकता है।
5. हिंदी ग़ज़ल साहित्य में ज़हिर कुरेशी के साहित्यिक योगदान का अध्ययन करने में उक्त अनुसंधान का महत्व है।

अनुसंधान सामग्री –

प्रस्तुत अनुसंधान कार्य के लिए जहीर कुरेशी जी के समग्र ग़ज़ल संकलनों के साथ साथ ग़ज़ल विधा से संबंधित विविध संदर्भ पुस्तकों तथा विविध पत्रिकाओं का शोध सामग्री के रूप में अवलोकन किया जायेगा। ग़ज़लकार जहीर कुरेशी जी से साक्षात्कार एवं चर्चा तथा मार्गदर्शन भी आवश्यकतानुसार लिया जाएगा।

अनुसंधान कार्य का अध्याय विभाजन –

प्रस्तुत शोध विषय का अध्याय विभाजन निम्नतः है–

प्रथम अध्याय : जहीर कुरेशी : जीवनी व्यक्तित्व एवं कृतित्व

व्दितीय अध्याय : ग़ज़लकार का समकालीन परिवेश।

तृतीय अध्याय : जहीर कुरेशी की ग़ज़लों में सामाजिक चेतना।

चतुर्थ अध्याय : जहीर कुरेशी की ग़ज़लों में राजनीतिक चेतना।

पंचम् अध्याय : जहीर कुरेशी की ग़ज़लों में धार्मिक चेतना।

षष्ठ अध्याय : जहीर कुरेशी की ग़ज़लों में आर्थिक चेतना।

सप्तम् अध्याय : हिंदी ग़ज़ल साहित्य में जहीर कुरेशी का योगदान।

उपसंहार

अनुसंधान कार्य का अध्याय निरूपण –

प्रस्तुत शोध–विषय को अध्ययन की दृष्टि से निम्नलिखित अध्यायों में विभाजीत किया गया है।

प्रथम अध्याय :–

प्रस्तुत अनुसंधान कार्य का प्रथम अध्याय **'जहीर कुरेशी : जीवनी व्यक्तित्व एवं कृतित्व'** शीर्षक से होगा। प्रस्तुत अध्याय में कुरेशी जी के जन्म से अब तक की उनकी जीवन यात्रा का परिचय दिया

जाएगा। उनका जन्म, शिक्षा, दीक्षा, माता – पिता, वंशगत परिचय, कार्यक्षेत्र, विवाह, पारिवारिक जीवन, व्यक्तित्व आदि के साथ साथ उनके समग्र ग़ज़ल लेखन–प्रवास का अवलोकन एवं अध्ययन कर उनके कृतित्व का निर्धारण किया जाएगा।

व्दितीय अध्याय :–

द्वितीय अध्याय **'ग़ज़लकार का समकालीन परिवेश'** शीर्षक से होगा। प्रस्तुत अध्याय में ग़ज़लकार के समकालीन परीवेश का परिचय दिया जायेगा। साहित्य के हर सर्जक पर अपनी सम–सामायीक स्थितियों का प्रभाव होना स्वाभाविक है। यही परिस्थितियाँ उसे उसकी प्रतीभा को सर्जना की ओर अग्रेसीत करती है। यही बात एक सर्जक के रूप में जहीर कुरेशी जी पर भी लागु होती है। इसीलिए जब तक ग़ज़लकार के सम–सामायिक स्थितियों का विश्लेषणात्मक एवं तथ्यगत अध्ययन नहीं होगा तब तक उसकी रचनाओं को मूल्यांकन की दृष्टि से न्याय प्राप्त नहीं होगा। अतः प्रस्तुत अध्याय में जहीर कुरेशी जी के समकालीन सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, एवं सांस्कृतिक आदि परिवेश का अध्ययन किया जाएगा।

तृतीय अध्याय :–

प्रस्तुत अनुसंधान कार्य का तृतीय अध्याय **'जहीर कुरेशी की ग़ज़लों में सामाजिक चेतना'** शीर्षक से होगा। इस अध्याय में उनकी ग़ज़लों में चित्रित समसामायिक सामाजिक परिवेश का चित्रण, समस्याओं का चित्रण एवं उसकी प्रासंगिकता का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया जाएगा।

चतुर्थ अध्यायः–

प्रस्तुत अनुसंधान कार्य का चतुर्थ अध्याय **' जहीर कुरेशी की ग़ज़लों में राजनीतिक चेतना'** शीर्षक से होगा। इस अध्याय में कुरेशी जी के लेखनी के स्वप्न (1975), एक टुकडा धूप (1979), चाँदनी का दुःख (1986), समंदर ब्याहने आया नहीं है (1992), भीड में सबसे अलग (203), पेड़ तन कर भी नहीं टूटा (2010), और बोलता है बीज भी (2013) चांदनी का दुख आदि प्रकाशित संग्रहों तथा इसके अनंतर लिखी हुई अप्रकाशित ग़ज़लों का अध्ययन कर उसमें चित्रित राजनितीक परिवेश एवं उसकी प्रासंगिकता का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया जाएगा।

पंचम् अध्याय :–

प्रस्तुत अनुसंधान कार्य का पंचम् अध्याय **'जहीर कुरेशी की ग़ज़लों में धार्मिक चेतना'** शीर्षक से होगा। इस अध्याय में कुरेशी जी की ग़ज़लों में चित्रित धार्मिक परिवेश तथा समस्याओं के साथ साथ उसकी वर्तमान आवश्यकता का विश्लेषण प्रस्तुत किया जाएगा।

षष्ठ अध्याय :–

प्रस्तुत अनुसंधान कार्य का षष्ठ अध्याय **'जहीर कुरेशी की ग़ज़लों में आर्थिक चेतना'** शीर्षक से होगा। इस अध्याय में आलोच्य रचनाओं में चित्रित आर्थिक चेतना एवं उसकी प्रासंगिकता को विश्लेषित किया जाएगा।

सप्तम् अध्याय :–

प्रस्तुत अनुसंधान कार्य का सप्तम् अध्याय **'हिंदी ग़ज़ल साहित्य में जहीर कुरेशी योगदान'** शीर्षक से होगा। इस अध्याय में कुरेशी जी द्वारा हिंदी ग़ज़ल साहित्य में दिये गये योगदान को स्पष्ट किया जाएगा।

उपसंहार–

प्रस्तुत अनुसंधान कार्य के अंत में **'उपसंहार'** को प्रस्तुत किया जायेगा। इसमें समग्र अनुसंधान कार्य के प्रतिफलन के साथ साथ उपलब्धियाँ एवं संपूर्ण शोध कार्य के विवेचित–विश्लेषित तथ्यों का निरूपण एवं निष्कर्ष प्रस्तुत किये जायेंगे।

यह शोध विषय का प्रारूप है, जिसमें यथासंभव आवश्यकतानुरूप शोध निदेशक की अनुमति एवं सलाह से परिर्वतन भी हो सकता है।

आधार ग्रंथ

1. लेखनी के स्वप्न (1975)– जहीर कुरेशी
2. एक टुकडा धूप (1979)– जहीर कुरेशी
3. चांदनी का दुःख (1986)– जहीर कुरेशी
4. समंदर ब्याहने आया नही है (1992)– जहीर कुरेशी
5. भीड में सबसे अलग (2003)– जहीर कुरेशी
6. पेड़ तनकर भी नही टूआ (2010) – जहीर कुरेशी
7. बोलता है बीज भी (2013)– जहीर कुरेशी

सहायक संदर्भ ग्रंथ

1. ग़ज़लकार जहीर कुरेशी की काव्य दृष्टि– डॉ. मधु खराटे. विद्या प्रकाशन, कानपुर.
2. जहीर कुरेशी की चुनींदा ग़ज़ले– डॉ. मधु खराटे. विद्या प्रकाशन, कानपुर.
3. हिंदी ग़ज़ल के प्रमुख हस्ताक्षर– डॉ. मधु खराटे. विद्या प्रकाशन, कानपुर.
4. ग़ज़ल का शिल्प – सुल्तान अहमद, प्रकाशन संस्थान, दरियागंज, दिल्ली.

5. ग़ज़ल : हिन्दी ग़ज़ल – सुल्तान अहमद, प्रकाशन संस्थान, दरियागंज, दिल्ली.
6. ग़ज़ल प्रवेशिका – राजेन्द्र पराशर, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली.
7. ग़ज़ल शिल्प और संरचना – डॉ. नरेश, हरियाणा साहित्य अकादमी, चंदीगड.
8. ग़ज़ल छन्द तथा नियम – डॉ. के. आर. पी. महर्षि.
9. ग़ज़ल : सौन्दर्य मिमांसा – डॉ. अब्दुर्रशीद ए. शेख.
10. साठोत्तरी हिंदी ग़ज़लः शिल्प और संवेदना – डॉ. सादिका असलम नवाब 'सहर', प्रकाशन संस्थान , दयानंद मार्ग, दिल्ली – 110002.
11. हिंदी ग़ज़ल संदर्भ एवं सार्थकता – डॉ. वेदप्रकाश अमिताभ. गिरनार प्रकाशन, मेहसाना, गुजरात.
12. हिंदी ग़ज़ल संरचना : एक परिचय – आर.पी.शर्मा महर्षि,प्रकाशक,बोरला सोसायटी,मुंबई
13. भारतीय काव्यशास्त्र में हिंदी ग़ज़ल की संकल्पना– डॉ.दुर्गेश नंदिनी, क्लासिकल पब्लिशिंग कंपनी, कर्मपुरा, नई दिल्ली.
14. हिंदी ग़ज़ल की भूमिका– डॉ. शिवशंकर मिश्र, लक्ष्मी प्रकाशन, गंगा विहार, दिल्ली.
15. हिंदी ग़ज़ल का वर्तमान दशक– सरदार मुजावर, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली.
16. हिंदी ग़ज़ल की विकास यात्रा– ज्ञानप्रकाश विवेक, हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकुला, हरियाणा.

शोध छात्र

प्रा. भेंडेकर निवृत्ती शेषेराव

शोध निर्देशक

डॉ. नरसिंगदास बंग
हिन्दी विभागाध्यक्ष
पु.अ.होलकर महाविद्यालय, राणीसावरगाव